प्रातःक्लास ॐ पिताश्री

20.8.65 R-मुखड़ा देख ले.....ओमशांति। मीठे2 सिकीलधे बच्चों ने गीत की एक लाइन सुनी कि दिल रूपी दर्पण में देखो कितना पाप और कितना पुण्य किया है। पाप और पुण्य। दिल दर्पण में विचार किया जाता है ना। यह तो है ही पापात्माओं की दुनियॉ। तुमको रोशनी मिली है तब समझाना होता है। सभी कहते हैं हम पापात्मा हैं। पुण्यात्मा तो यहॉ कोई हो नहीं सकता। पुण्य आत्माओं की दुनियॉ सतयुग को कहा जाता है। यहॉ पुण्यात्मा कहॉ से आई?पाप ही करते रहते हैं ; क्योंकि रावणराज्य है। खुद कहते भी हैं हे पतित–पावन आओ। हम जानते हैं भारत पुण्यात्माओं का खण्ड था। कोई भी पाप नहीं करते थे। शेर , बकरी इकट्ठा पानी पीते थे। खीर खण्ड थे। बाबा भी कहते हैं ना बच्चे खीरखण्ड बनो। तमोप्रधान में पुण्यात्मा कहॉ से आए?अभी बाप ने रोशनी दी है। तुम जानते हो हम सतोप्रधान देवी–देवताएं थे। उन्हों की महिमा है सर्वगुण .....हम खुद उनकी महिमा करते हैं। कहते हैं मैं निर्गुण हारे में कोई गुण नाहीं। प्रभु आप आकर जब हम पर तरस करो तब हम भी ऐसे बन सकते हैं–यह आत्मा ने कहा। आत्मा समझती है हम इस समय पापात्मा हैं। पुण्यात्मा तो देवी–देवताएं हैं जो पूजे जाते हैं। अभी जाकर देवताओं के चरणों में झुकते हैं। साधू–संत आदि भी तीर्थों पर जाते हैं। अमरनाथ श्रीनाथ द्वारे जाते हैं। तो यह है पापात्माओं की दुनियॉ। भारत पुण्यात्माओं की दुनियॉ थी जब ल.ना. का राज्य था। उनको कहा ही जाता है स्वर्ग। मनुष्य मरते हैं तो कहते हैं स्वर्ग गया ; परंतु स्वर्ग है कहॉ? स्वर्ग जब था तब तो सतयुग था। मनुष्यों को तो जो आता सो कह देते हैं। समझ कुछ भी नहीं है। स्वर्ग में गया तो जरूर नर्क में था। सन्यासी मरते हैं तो कहते हैं ज्योति ज्योत में समाया। फर्क हो गया ना। ज्योति ज्योत में समाया यानी फिर यहॉ आना नहीं है। तुम जानते हो जहॉ हम आत्माएं रहती हैं उनको निर्वाणधाम कहा जाता है। वैकुण्ठ को निर्वाणधाम नहीं कहेंगे। बच्चों को बहुत मीठी2 ज्ञान की बातें सुनाते हैं जो बहुत अच्छी रीति धारण करनी चाहिए। तुम जानते हो बाबा आए हैं हमको वैकुण्ठ का रास्ता बताने। राजयोग सिखलाने। पावन दुनियॉ का मार्ग बताने। गाइड बन ले जाते हैं। बरोबर विनाश सामने खड़ा है। विनाश होता है पुरानी दुनियॉ का। पुरानी दुनियॉ में ही उपद्रव होते हैं। तो बाबा कितनी मीठा है। अंधों की आय लाठी बनते हैं। मनुष्य तो सब घोर अंधेरे में धक्के खाते रहते हैं। गाया भी जाता है ब्रह्मा की रात और ब्रह्मा का दिन। ब्रह्मा तो यहॉ है ना। बाप आते ही हैं रात को दिन बनाने लिए। आधा कल्प है रात आधा कल्प है दिन। अभी तुमको मालूम हो गया है। वो तो समझते हैं कलियुग अजुन बच्चा है। कब2 कहते भी हैं इस दुनियॉ का विनाश जरूर होना है ; परंतु समझते कुछ नहीं हैं। आजकल तो मुश्किल कोई घर–बार छोड़ते हैं। कोई कारण होगा तो भाग जाए सन्यासी बनेंगे। बीच में गवर्मेंट आर्गेनियन्स निकालती थी कि सन्यासियों को भी लाइसेंस होना चाहिए। ऐसे थोड़े ही बस जो घर से रूठे वो जाय सन्यासी बने। मुफत में बहुत माल मिल जाते हैं। उन्हों के भी बहुत बड़े2 अखाड़े बने हुए हैं। दो2 रु. निकालने से भी हजारों रुपया इकट्ठा हो जाता है। धर्माउ तो बहुत निकालते हैं ना। खाते रहो। वास्तव में उन्हों की जैसे कि अब राजाई है। महामंडलेश्वर है। उन्हों की भी साधू समाज है। समझते हैं साधू समाज जैसा कोई है नहीं जो भ्रष्टाचार को बंद करे ; परंतु नम्बरवन भ्रष्टाचारी तो यह है। यह तुम जानते हो। वो तो बाप से ही बेमुख कर देते हैं। उतरती कला है ना। जो भी मत देते हैं गिरने की ही देते हैं। गृहस्थ धर्म में कमल फूल समान तो सन्यासी रहते नहीं। तुम बच्चियॉ कहती हो हम सन्यासियों का भी सामना करेंगे। समझाना चाहिए तुम्हारा है हठयोग। हद का सन्यास। कहते हैं हमने घर–बार छोड़ा है। फिर भी तो इस दुनियॉ में हैं ना। और जगह तो कहॉ जा नहीं सकते। यह है हद का सन्यास। देखो मुज़ाफरपुर की नारियॉ अभी तैयार हुई हैं। समझती हैं हम सन्यासियों का सामना करें। बाबा युक्ति समझाते रहते हैं कैसे समझाओ। बोलो हम चाहते हैं कमल समान गृहस्थ व्यवहार में रह

जीवनमुक्ति पावें। अभी तो हम पतित हैं। देवी–देवताएं भारत में पावन थो ना। हम वो ज्ञान अथवा जीवनमुक्ति चाहते हैं। आप तो घर–बार छोड़ जाते हो। तुम्हारा है हद का सन्यास। इस समय तो सारी दुनियॉ पतित है। उनको फिर पावन बनाना यह तो एक पतित–पावन बाप का ही काम है। और तो कोई बनाय ना सके। पावन गृहस्थ धर्म में सुख तो तुम दे नहीं सकते हो। तुम तो स्त्री को ही विधवा बना जाते हो। तुम गृहस्थ को पवित्र फिर कैसे बना सकते हो? सतयुग में पवित्र गृहस्थ था ना। ल.ना. के चित्र भी हैं। देवी–देवताओं की महिमा गाते हैं सर्वगुण .....यह तुम्हारी महिमा नहीं है। हम तो सन्यास कर जंगल में नहीं जावेंगे। हमको तो वह ज्ञान चाहिए जो हम गृहस्थ धर्म में रहते पवित्र रहें। राज्य करें। तुम्हारा तो हठयोग कर्मसन्यास है। कर्मसन्यास हो ना सके। कर्मधारा एक सेकेण्ड भी रह ना सके। कर्मन्यास अक्षर ही रॉग है। यह है कर्मयोग राजयोग। हम सूर्यवंशी देवी–देवता थे। अब जान गए हैं कैसे हमको 84 जन्म लेने पड़ते हैं। वर्ण भी गाए जाते हैं। ब्राह्मण वर्ण का कोई को पता नहीं है। हम अब फिर देवता वर्ण में जाने चाहते हैं। तुम तो सन्यासी हो। शंकराचार्य आदि का मठ तो बाद में आता है। तुम सतयुग की बातों को क्या जानो। यह तो बाप ही सारी सृष्टि का चक्कर बैठ समझाते हैं। तुम तो आते ही बाद में हो। फिर भी रजोगुण में ही आवेंगे। तुम तो कह देते हो स्त्री नर्क का द्वार है। यह तो तुम निंदा करते हो। देवियों की तुम इतनी पूजा करते हो। जरूर वो स्वर्ग का द्वार खोलने वाले होंगे। तुम तो सब नर्क में हो ना। स्वर्ग सतयुग को कहा जाता है। क्या तुम पावन दुनियॉ स्थापन कर सकते हो? तुम तो पतित हो तब तो तुम जाते हो गंगा स्नान करने। सन्यासियों के साथ बात–चीत करने को शक्ति चाहिए। तुमको यह पता नहीं है सच्चा2 कुम्भ का मेला किसको कहा जाता है। आत्माओं और परमात्मा का जब मेला होता है अर्थात् पतित–पावन और पतितों का मेला होता है तब पतितों को बैठ पावन बनाते हैं। मुजाफरपुर की बच्चियॉ अब सर्विस में खड़ी हुई हैं। थोड़े ही टाइम में आपस में मिल सर्विस चला रही हैं। कहॉ2 तो बी.के. बिगर एकदम रड़ियॉ मारने लग पड़ती हैं कि बाबा हम ठंडे पड़ गए हैं। हम चल नहीं सकते। यह बिगर बी.के. सेंटर चला रहे हैं। इसमें ढीले होने की तो बात ही नहीं। बाप महामंत्र देते हैं। बाप और वर्से को याद करते रहो तो तुमको राजधानी का तिलक मिल जावेगा। मीठे2 लाडले बच्चे गृहस्थ व्यवहार में कमल फूल समान रहो। जितना प्यार से काम निकल सकता है उतना गुस्से से नहीं। बहुत मीठे बनो। बाप की याद में सदैव मुस्कुराते रहो। देवताओं के चित्र देखो कितने हर्षित रहते हैं। अभी तुम जानते हो यह तो हम थे। हम सो देवता थे फिर सो क्षत्रिय , वैश्य , शूद्र बने। अभी संगम पर ब्रह्मावंशी बने हैं। ब्रह्मावंशी सो ईश्वरवंशी। बाप का वर्सा मिलता है मक्तिधाम औ जीवनमुक्तिधाम का। यह भी तुम जानते हो। जब देवी–देवताओं का राज्य था तो और कोई धर्म नहीं थे। चंद्रवंशी भी नहीं थे। यह तो समझने की बात है ना। हम सो का अर्थ भी उन्होंने आत्मा सो परमात्मा निकाल लिया है। अभी तुम जानते हो हम सो देवता थे। फिर क्षत्रिय बने.....यह आत्मा कहती है। हम आत्मा पवित्र थीं तो शरीर भी पवित्र था। वो है ही वाइसलेस वर्ल्ड। यह है विशष वर्ल्ड। सुखधाम , दुःखधाम और शांतिधाम जहॉ हम आत्माएं रहती हैं। हम आपस में भाई2 हैं ना। कहते भी हैं चीनी, हिंदू भाई2 ; परंतु अर्थ भी समझे ना। आज भाई2 कहते कल बंदूक लगाते रहते। आत्माएं तो सब ब्रदर्स हैं। परमात्मा सर्वव्यापी कहने से तो सब फादर्स हो जाते हैं। फादर को वर्सा देना है। ब्रदर्स को वर्सा लेना है। रात–दिन का फर्क हो जाता है। बच्चियॉ सन्यासियों को भी समझा सकती हैं। पहले2 यह तो समझो भगवान किसको कहा जाता है। वो तो पतित–पावन है ना। उनसे ही पावन बनना है। हम मनुष्य से देवता बनने चाहते हैं।ग्रंथ में भी है मनुष्य से देवता.....गाया जाता है सेकेंड में जीवनमुक्ति। हम देवताएं जीवनमुक्त थे। सो असुर बने हैं। रावण ने असुर बनाया है। रावण राज्य द्वापर से शुरू होता है। देवताएं वामवर्ण में जाते हैं। वो निशानियॉ भी रखी हैं। जगन्नाथपुरी में देवताओं के बहुत गंदे चित्र हैं। आगे तो यह समझ में नहीं आता था। अब कितना समझ में आया है। वंडर खाते थे देवताओं के आगे गंदे चित्र यहॉ कैसे लगे हुए हैं।

और अंदर काला जगत नाथ बैठा हुआ है श्रीनाथ द्वारे में भी। चित्र काले दिखाते हैं। यह किसको पता नहीं जगतनाथ की शकल काली क्यों दिखाई है। कृष्ण के लिए तो कहते उनको सर्प ने डसा। राम को क्या हुआ?नारायण की भी सॉवरी शकल दिखाते हैं। शिवलिंग भी काला दिखाते हैं। सब काले ही काले। जैसी सृष्टि वैसी दृष्टि। इस समय है ही सब पतित काले। तो भगवान को भी काला बना दिया है। अभी तुम समझ गए ना। पहले2 शिव की पूजा करते थे। तो हीरों का लिंग बनाते थे। अभी वो सब चीजें गायब हो गई हैं। यह तो मोस्ट वैल्युएबल चीज है। पुरानी चीज का मान बहुत होता है। पूजा शुरू हुए 2500 वर्ष हुए हैं। तो इतने ही पुराने होंगे और क्या? पुराने ते पुराने चित्र देवताओं के। यह तो फिर कह देते लाखों वर्ष की यह पुरानी चीज है। अभी तुम जानते हो 5000 वर्ष पहले भारत सतयुग था। देवी–देवताओं का राज्य था। अभी कलियुग है। विनाश सामने खड़ा है। सबको जाना है। बाप ही सबको ले जाता है। ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मण बनें फिर तुम देवता बन पालना करेंगे। यह बातें कोई गीता भागवत आदि में नहीं है। बाप कहते हैं यह नालेज गुम हो जाती है। ल.ना. आदि त्रिकालदर्शी नहीं हैं। फिर परम्परा यह ज्ञान चल कैसे सकता। तुम ही इस समय त्रिकालदर्शी बनते हो। सच्ची2 सेवा भी तुम करते हो। तुम हो रुहानी सोशल वर्कर। तुम आत्म अभिमानी बनते हो। रूह में जो खाद पड़ी है वो निकले कैसे?बाबा जवाहरी भी है। सोना में खाद पड़ती है तो समझ सकते हैं आत्मा में खाद पड़ने से तमोप्रधान बने हैं। पहले सिल्वर की फिर कॉपर की आयरन की खाद पड़ते2 आत्मा पतित हो गई है। अब फिर पावन कैसे बने? बाप कहते हैं हे आत्माओं माम एकम याद करो। अपन को आत्मा निश्चय करो। पतित–पावन बाप श्रीमत देते हैं। भवगवानोवाच हे आत्माएं तुम्हारे में खाद पड़ी है। अभी तुम पतित हो। पतित फिर महात्मा थोड़े ही हो सकते। अब फिर तुम पवित्र आत्मा कैसे बनो सो बाप बैठ समझाते हैं। एक ही उपाय है मामएकम याद करो। .....बन आए हैं। कहते हैं लाडले बच्चे सुनते हो माम एकम याद करो। इस योग अग्नि से ही तुम्हारो विकर्म दग्ध हो जावेंगे। मुख्य बात है योग। कितने योग आश्रम हैं। अनेक प्रकार के हठयोग के चित्र लगे हुए हैं। बाप कितना सहज कर बतलाते हैं। यह है योग की अथवा याद की भट्ठी। भल गृहस्थ व्यवहार में रहो, भोजन आदि बनाओ, बच्चों की सम्भाल करो। अच्छा सवेरे तो टाइम है ना। कहा जाता है सिमर प्रभात मोरे मन। आत्मा में मन–बुद्धि है तो आत्मा कहती है मोरे मन अब राम बाप को सिमरो।भक्ति की हमेशा सवेरे करते हैं। तुम भी सवेरे उठ बाप को याद करो। याद से ही विकर्म भस्म होंगे। किचड़ा निकल तुम आत्मा कंचन हो जावेंगी। फिर तुमको काया भी कंचन मिलेगी। अभी तो तुम्हारी आत्मा 2 कैरट भी नहीं है। तुम जानते हो हम सो देवता थे। 84 जन्मों का हिसाब चाहिए ना। भारत के देवी–देवताओं को ही लेना पड़े। बाप कहते हैं हे आत्माएं तुम ही पहले2 आय देवता बन तुम राज्य करते थे। सतयुग था। अभी कलियुग है। फिर सतयुग होगा। वर्ल्ड की हिस्ट्री–जाग्राफी रिपीट होती है। यह भी समझते हैं ; परंतु आयु कितनी है वही नहीं जानते। कल्प की आयु को ही नहीं जानते हैं। बाप पूछते हैं गोल्डन एज में आवेंगे कि नहीं। क्या विषय वैतरिणी नदी में ही गोते खाते रहेंगे। मैं आया हूँ श्रीमत दे श्रेष्ठ बनाने। सन्यासियों को भी यह समझा सकते हो ना। आत्मा इस समय पतित बनी है। तुम भी पतित हो तब तो गंगा स्नान करते हो। कोई फिर कहते हैं सभी स्नान कर गंदा बना देते हैं। हम स्नान कर गंगा के साफ बना देते हैं। बाबा तो अनुभवी है ना। बाबा ने बहुत गुरू किए हुए हैं। बाबा पूछते थे कैसे घर–बार छोड़ा। कहते थे यह हम नहीं बतावेंगे। क्यों? ऐसे2 गुरुओं से सामना भी करते थे। तो तुम बच्चों को भी खड़ा होना है। बाप कहते हैं देह के सब धर्म छोड़ माम एकम याद करो। इस योग अग्नि से ही खाद निकलेगी। औरा कोई उपाय नहीं है। मुजाफरपुर की बच्चियॉ ऐसी हिम्मत कर दिखाएंगी तो नम्बरवन में हम उनको ले आवेंगे। बहादुर बनना है। डरो मत। जिनका रक्षक बाप बैठा है उनको क्या डरना है। समय आने पर बचा लेंगे। कुछ भी नहीं। अच्छा, मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति यादप्यार गुडमार्निंग।